International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 2 January – February - 2026

# 'गायब होता देश' उपन्यास में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन

**प्रा. नितेश गांगवे**

*हिंदी विभाग,*

*दहिवडी कॉलेज दहिवडी*

*Corresponding Author – प्रा. नितेश गांगवे*

**DOI - 10.5281/zenodo.18654521**

**प्रस्तावना :**

आदिवासी जीवन को अपनी लेखनी का विषय बनाने वाले लेखकों में रणेंद्र का नाम विशेष रूप से उभरकर सामने आता है | जिन्होंने अपनी रचनाओं में प्रखरता से आदिवासी चेतना पक्ष को स्थान दिया है | उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर आदिवासी संस्कृति की असीम छाप देखी जा सकती है | भूमंडलीकरण के इस दौर में तीव्र विकास ही सभी के लिए एकमात्र लक्ष्य हो गया है | तीव्र विकास की इस अंधाधुंध दौड में व्यक्ति अच्छे-बुरे, नैतिक-अनैतिक, शुभ-अशुभ आदि शुभ बातों का ध्यान ही नहीं रख रहा है और बहुत से ऐसे कार्य करता जा रहा है जिसे उसको नहीं करना चाहिए | आज विकास के नाम पर अपने आप को इस तरह बदलता चला जा रहा है कि उसकी अपनी वास्तविक पहचान ही खोती जा रही है | अर्थात उसके अपने सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्य भी एक प्रकार से गायब होते जा रहे हैं | यह भौतिक समृद्धि भूमंडलीकरण की उपज ही है | यह एक ऐसा बहुआयामी विषय है जिसके अंतर्गत आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक सभी पक्ष आ जाते है | लेकिन इस बहुआयामी तथा विशिष्ट परिघटना का प्रभाव सभी के लिए एक समान नहीं है कुछ लोगों के लिए ये विकास की एक जादुई छडी साबित हुआ है तो वही पर ज्यादातर लोगों के लिए यह एक प्रकार की आकस्मिक आंधी या तुफान ही साबित हुआ है, जिसने उन्हे उखाडकर फेक दिया है |

रणेंद्र का उपन्यास 'गायब होता देश' आदिवासी समाज की इन्हीं समस्याओं, संकट की स्थिती, उनकी कला एवं संस्कृति आदि को केंद्र में रखकर लिखा गया है | प्रस्तुत उपन्यास में मुंडा जनजाति को केंद्र में रखकर उनकी वास्तविकताओं से समाज को अवगत कराने का सराहनीय प्रयास किया है | 'गायब होता देश' उपन्यास में जीवन संस्कृति का विश्लेषण सिलसिलेवार ढंग से वर्णन किया है | प्रस्तुत रचना में मुंडा समुदाय का परिचय दिया गया है | प्रस्तुत उपन्यास में भ्रष्ट शासन व्यवस्था, भूस्वमियों, ठेकेदारों, कंपनी मालिक, अवैध करोबारियों, नेताओं और पुलिस प्रशासन पूरे सिस्टम की पोल खोलता नजर आता है | इस उपन्यास में पत्रकारों की अहम भूमिका देखने को मिलती है | यह उपन्यास मुंडा भूस्वमियों की अवैध जमीन फरोख्त और खदानों के अवैध खनन से परेशान है | मुंडा आदिवासी अपने अधिकारों की लडाई लडते हुए फिर विकास के नाम पर लुटते जा रहें है | इतिहास गवाह है कि मुंडा आदिवासी हमेशा से संघर्ष करते आये फिर चाहे विवाद जमीन का हो या फिर रोजी रोटी का, हमेशा ही ग्लोबल भूमंडलीकरण या नवीनीकरण द्वारा पतन होता रहा है |

**'गायब होता देश' में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन :**

रणेंद्र का उपन्यास 'गायब होता देश' में झारखण्ड के मुंडा आदिवासियों की समस्या, पीडा और दुःख-दर्द को यथार्थपूर्वक चित्रित किया गया है | पूंजीवादी

विकास की दौड़ में शामिल लोग किस तरह घास की तरह एक मानव समुदाय को चरते जा रहे हैं 'गायब होता देश' इसी की मार्मिक कहानी है | इस घास को चरने में आज का हर वह मनुष्य शामिल है जो इस पूंजीवादी समाज की आपा-धापी और भागदौड़ में शामिल है | प्रस्तुत उपन्यास मुंडा आदिवासी समुदाय से जुडा है जिसकी प्रमुख समस्या विस्थापन है | उनका यह विस्थापन केवल जल, जंगल, जमीन से नहीं बल्कि उनकी सभ्यता, संस्कृति और इतिहास से विस्थापन होने से जुडा हुआ है | इस स्थिती में सबसे बडा हाथ पूंजीपति वर्ग का है तथा मीडिया, सरकार भी इनकी सहयोगी रही है | मुंडा आदिवासी समाज जो अपनी गौरवशाली संस्कृति और समृद्धी इतिहास पर गर्व करता था, आज अपनी संपत्ति को सिर्फ गायब होते देख रहा है | इनके निवास स्थान, जल- जंगल- जमीन सब गायब हो रहे हैं | साथ ही इनकी संस्कृति भी गायब होने लागी है | इन सभी समस्याओं को रणेन्द्र ने अपणे उपन्यास में चित्रित किया है |

आदिवासी सदियों से जंगलों और पहाडी इलाकों में जीव-जंतु के साथ अपना संबंध गहरा कर जीवन यापन कर रहें है | जल-जंगल उनकी संपत्ति रही है | इस संपत्ति के लिए उन्हें हमेशा से दबाया और कुचला जाता रहा है | जिससे उनकी जिंदगी अभावग्रस्त हो गई है | आदिवासी समाज अपनी स्थिती में सुधार लाने की कोशिश करता है तब पूंजीपति वर्ग द्वारा उसे नाकाम करने के कई हथकंडे अपनाए जाते हैं | ये उनके जीवन को अंधकारमय बना देते हैं तथा लडकियों को रोजगार के बहाने बुलाकर अपनी काम वासना का शिकार बनाते है | उपन्यास की पात्र अनुजा कहती है –"पूरी दुनिया को लगता है कि बस जंगल में पहुंचने भर की देरी है बाकी वहाँ तो सब फ्री | हाट- बाजार में बाहर से आने वाले सारे मरदों की कल भी यही सोच थी, आज भी यही सोच है | तेरह-चौदह की उम्र रही होगी | हाट से लौटते वक्त ड्राईवर- खलासियों ने सुनसान डहर में घेरने की कोशिश की | मैं भागी बाकी मेरा पांव एक लत्तर में फंस गया, गिर पडी | उन्होंने दबोच लिया | उस वक्त तक मुझे भी मालूम नहीं था | मैं भी कहानियाँ-किस्से ही सुना करती थी |"[१] वर्तमान समय में आदिवासी सदियों की गुलामी, अत्याचार, उत्पीडन तथा शोषण से मुक्त होना चाहता है | यह समाज अन्य समाजों की तुलना में अत्याधिक पिछडा होने के कारण विकास एवं प्रगती की राह से दूर रहा है |

आदिवासी परंपरागत संतोषी स्वभाव के होने के कारण इन्हे अधिक धन कमाने की लालसा नहीं होती है | वे अस्थायी कृषी पद्धती में सामूहिक रूप से कृषि कार्य करते हैं | दो-तीन साल तक फसल उपजते हैं इसके बाद दूसरे स्थान पर इसी प्रणाली के अनुसार कृषि कार्य किया जाता है | इसी संदर्भ में उपन्यास का पात्र वीरेन कहता है कि –"हमारे पूर्वजों ने हजारों साल पहले यहां के जंगल काटकर कर खेत बनाए | बस्तियां बसाई | क्या यही उनकी गलती थी? वे सबको इज्जत देते थे, उनके पेट छोटे थे, भूख छोटी थी क्या यह उनकी गलती थी? उन्होंने इस धरती माँ, पेड-पौधों की इज्जत की | क्या यह गलती थी? उनसे उतना ही लिया जितनी उनकी जरुरत थी | उनकी जरुरतें बहुत कम थी और वे बहुत खुश थे |"[२]

आदिवासी धैर्यवान, वीर तथा स्वतंत्रता प्रेमी होते है | वे सीधे-सादे सहज स्वभाव के होते हैं और सभ्य लोगों की तरह धूर्त और लालची नहीं होते | कृषि-व्यवसाय उन्हें प्रिय है | धान की खेती विशेष रूप से होती है | इस पर रणेंद्र लिखते है कि -"लेकिन वे यह अच्छी तरह जानते हैं कि जिन लोगों को ज्यादा से ज्यादा ताकत, ज्यादा से ज्यादा धन, ज्यादा से ज्यादा सोना, ज्यादा मुनाफा चाहिए , जो लोग धरती, प्रकृति, वनस्पती की इज्जत नहीं करते वे हमारे सहिया, साथी, दोस्त नहीं हो सकते इनसे दूर रहना है | वे अलग तरह के लोग हैं | हमारी तरह होन चाहते हैं न हमारी बातों पर उन्हें विश्वास है | उनकी भूख कभी मिट नहीं सकती | उन्होंने अपनी जरुरतों को इतना बढा लिया है कि धरती की

पूरी उपरी सतह, नदियों का मिठा पानी, जंगलों की सारी हरियाली, धरती के भीतर के सारे खनिज कम पड रहें हैं |"[३]

आदिवासी अर्थव्यवस्था अधिकाधिक वन उत्पादों पर निर्भर रहती है | वे वनों से विभिन्न प्रकार के उत्पादनों का संग्रह करते हैं | जैसे वे वनों का संरक्षण करते हैं वैसे ही गैर-आदिवासी उनका शोषण करते रहे है | स्वतंत्रता के बाद वन नीति लागू होने के कारण वनों में जाकर उत्पदनों का संग्रह करने में कठिनाई महसूस करने लगे है | इन आदिवासियों की खुद की जमीन न होने के कारण वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते है साथ ही साथ वे जंगली जानवरों का संरक्षण करते है और उनकी वजह से अपनी जीविकापार्जन करते हैं तथा यह इनका परंपरागत पेशा बन चुका है | इन जंगली जानवरों को बचाने के लिए सरकार ने कई नियम लागू कर दिये | जिससे इनका जानवरों से संबंध टूट गया है परिणामस्वरूप आदिवासी जीवन संकट में पड गया है |

राजनीतिक स्वार्थो के लिए सत्ता लोभी नेताओं द्वारा इन आदिवासी समुदायों का उपयोग किया जाता है | किसी रैली का आयोजन हो या किसी बडे मंत्री का भाषण उन्हें गाडियो में भरकर इकठ्ठा कर दिया जाता है | उनके विकास के वादे किए जाते हैं किंतु उनके हिस्से आती है केवल निराशा | मुंडाओं की खेत-जमीन पर कब्जा करने के लिए सिंडीकेट बनाकर रियलएस्टेट कंपनियां, स्थानीय पुलिस, नेता, माफिया आदि से मिलकर इनका शोषण करती रही है | प्रकृति की गोद में रहने वाले आदिवासियों को इसलिए मोडा जा रहा है क्योंकि वे अपनी संपत्ति को खोकर इस मुनाफाखोर संस्कृति के जाल में फँस जाएँ और अपनी जमीन का सौदा उन लुटेरों के हवाले कर दे जिनसे वे सदियों से लडते आ रहे हैं | प्रस्तुत उपन्यास में रणेन्द्र लिखते है – "इन भूत-प्रेत- चुडैलों ने असानी से सब पर कब्जा कर लिया | उनके मायावी जादू का साम्राज्य कायम रहा | एकदम आंख बंद और डिबिया गायब वाला जादू चलता गया | आदिवासी जमीन के प्लाट दिन दहाडे गायब हो रहे थे | सो बंद तहखानों की तडपती आत्माओं की कराह, चीख, रुदन को कोई राहत नहीं थी|"[४] प्रस्तुत उपन्यास में रणेंद्र ने अत्यंत मार्मिक रूप से मुंडा आदिवासियों की समस्याओं को चित्रित किया है कि किस तरह आदिवासियों को राजनीतिक जाल में फंसाया जा रहा है, तथा पूंजीपति, घुसखोर, भ्रष्टाचार के जरिए उन आदिवासियों की संपत्ति को छीन रहें हैं परिणामतः पूंजीपतियों को तो लाभ हो रहा है पर आदिवासियों का जीवन संकट में पडता जा रहा है | अपने स्वार्थ के लिए केवल अपना पेट भरने के लिए औरों की संपत्ति को छीन लेना उनके दुःख, दर्द को बढाना कहां तक न्यायोचित है? आदिवासियों के प्रति सभ्य समाज के लोंगों का स्वभाव घृणा से ही भरा होता है |

आदिवासी समाज की संस्कृति परंपरागत रूप में विद्यमान रही है | इनके देवी- देवता सिंगबोंगा, अदिंगबोंगा, देसउली बोंगा, मरांगबुरु आदि हैं | इनके अधिकांश देवता प्रकृति प्रदत्त जंगल पहाड आदि होते हैं | इन आदिवासियों को उनके देवताओं से कभी नुकसान नहीं होता | इनका नुकसान तो सभ्य कहे जाने वाले बाहरी समाज से होता है | उपन्यास में वर्णित खडा निशाण जिसमें सोमेश्वर के प्राण बचे थे जो देसउली बोंगा की ही दया "शायद सात दिनों से रात-दिन यहीं इंतजार कर रहें थे | शायद उन्हें विश्वास था देसउली बोंगा मेरा नुकसान नहीं करेंगे | मैं किसी बुरी नियत से हीरों को ढूंढ़ नहीं रहा था, सो देसउली बोंगा भी दया करेंगे | शायद देसउलीबोंगा की ही दया थी कि सात दिन बाद भी सलामत था |"[५] आदिवासियों का मानना होता है कि वह कभी गलत रास्ते में जाते नहीं अगर कोई बुरी नियत में जाता है तो देसउली बोंगा भी दया नहीं करेंगे | उनके धार्मिक विश्वासों में पूर्वज पूजा का एक विशिष्ट स्थान रहा है | आज इनके परंपरागत विद्यमान रही संस्कृति एवं धार्मिक आस्थाएँ इनसे धीरे -धीरे दूर होने लगी हैं | आदिवासियों की संस्कृति,

संप्रदाय को जीवित रखना है तो उनके प्रति आदर भाव होना चाहिए |

विस्थापन आदिवासियों की नियती रही है | भूमंडलीकरण के दौर में पिछले दस-पंद्रह वर्ष से यह समस्या तेजी से बढ रही है | उपन्यास में भारत के विशेष रूप से झारखंड के मुंडा आदिवासी समुदाय का अपने अस्तित्व, आत्मसम्मान और अस्मिता की रक्षा के लिए लंबे संघर्ष और निरंतर मिटते जाने की प्रक्रिया का संवेदनशील चित्रण है | आज के समय में सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाएँ, मशनरियों, जमींदारी के द्वारा हमेशा आदिवासियों को लुटने में व्यस्त रहते हैं | विकास के नाम पर आदिवासियों को सपनों में डुबा देते हैं –“आदिवासियों को जमीन के बदले स्टेक होल्डर बनाने का सपना, हर अपार्टमेंट, स्काईस्क्रोपर में उन्हें फ़्लैट दिलाने का सपना आदिवासियों के लिए ...यह करने... वह करने का सपना, कश्तकारी कानून को और मजबूत करने का सपना और जाने क्या....क्या ढेर सारे सपने |..बस सपना ही सपना |”[६] इस तरह आदिवासियों को लालच दिखाकर अपना स्वार्थ पूरा कर लेते हैं इसलिए आदिवासी केवल खानाबदोश जीवन बिताने पर मजबूर हैं |

‘गायब होता देश’ उपन्यास में वर्णित आदिवासी दुलमी बांध के खिलाफ नेतृत्व कर रहे परमेश्वर सिंह पाहन की हत्या को ऐसा रूप दिया जाता है कि “गश्तीदल पर घात लगा कर हमला | हमले का नेतृत्व परमेश्वर सिंह पाहन का रहा था पाहन के साथ दो अन्य कुख्यात नक्सली भी जवान फायरिंग में मारे गए |”[७] इस स्थिती में पूंजीपति वर्ग के लोग तथा जमिदारों के हाथों से बीके हुए समाचार पत्र तथा मीडिया ने भी पूंजीपतियों की सत्ता को मजबूत बनाया | आदिवासी विस्थापन के कारण जमीनों तथा जंगलों से दूर होते जा रहे हैं | उनके पुरखों की समाधियां विकास के नाम पर हडप ली जा रही हैं | प्रकृति के सान्निध्य में रहने वाले आदिवासी आज बिमारीयों और कुपोषण का अकाल मृत्यु का शिकार हो रहें है | इनके पास शुद्ध हवा, हरे-भरे वृक्ष, जंगलों से ढके पहाड, पंछी- जानवर, जंगली फुलों- फलों से लदे पेड आदि है | आदिवासी समाज पेडों की पूजा करतें है | वे आज भी पेडों को बचाने के लिए लड रहें है , इसलिए उनकी परंपरागत संस्कृति, तथा उनकी संपत्ति को बचना हमारे लिए आवश्यक है |

निष्कर्ष :

अतः कहा जा सकता है कि रणेंद्र जी वर्तमान युग के प्रख्यात व चर्चित कथाकार है | उन्होंने समकालीन साहित्यकारों से अलग हटकर आदिवासी जीवन को अलग ढंग से प्रस्तुत किया है | जिसमें संघर्षरत समुदाय का साहस एवं विरोध का प्रदर्शित स्वर देखने को मिलता है | स्त्री पात्रों के साथ हुये अत्याचार, बलात्कार पर सवाल उठाया है | साथ ही विस्थापन झेल रहे समुदाय में प्रतिशोध का स्वर भी सुनाई देता है | उपन्यास के पात्र परिवर्तन की दिशा की ओर अग्रसर हो रहे है | वर्चस्व की मानसिकता की वजह से एक ओर तो आदिवासी जीवन–दर्शन और संस्कृति को हमेशा हेय की दृष्टि से देखा गया वही दूसरी ओर उनकी जमींन, उनका जंगल, उनका जीवन सब एक-एक कर विकास की भेंट चढ़ा दिया गया | उसकी जमीन पर कल-कारखाने और बड़े उद्योग बन रहे हैं ,बड़े-बड़े चमकदार मॉल बन रहे हैं लेकिन उस जमीन के असली हकदार उसी की चमक में दफ़न हो रहे हैं |

**संदर्भ ग्रंथ :**


१. रणेन्द्र- ‘गायब होता देश’- पेंगुईन बुक्स इंडिया सं. २०१४ पृ.- २६८
२. वही -१०४
३. वही -२७०
४. वही -७८
५. वही -१४५
६. वही -१५३
७. वही -३८